डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

BA-I
History (Hons)

Old stone age and new stone age

प्रश्न - पूर्व- पाषाण युग एवं नव पाषाण युग।

उत्तर - सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डारविन द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त कि "इस पृथ्वी पर मानव का प्रादुर्भाव आज से लाखों वर्ष पहले हुआ और काल क्रम में यह क्रमशः विकासोन्मुख होता चला गया।" इसे मानव सभ्यता की उत्पत्ति का विकासवादी सिद्धान्त कहा जाता है। मानव सभ्यता के विकास के सम्बन्ध में सुदूर अतीत में एक लम्बे समय तक यह मान्यता बनी रही कि, इस सृष्टि की रचना एवं विभिन्न प्राणियों का सृजन ईश्वर की कृपा से हुई थी। यह सिद्धान्त मानव की उत्पति एवं सभ्यता के विकास का दैविक सिद्धान्त कहलाता है। आज के मानव सभ्यता की सफलता रूपी विशाल संरचना की नींव लाखों वर्ष पूर्व में ही रखी गयी थी। मानव की स्वभाविक प्रवृति जैसे - खोज करना, विकास करना, सीखना आदि ने इसे आज के वर्तमान मानव तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अब यह प्रश्न उठता है कि आखिर मनुष्य को अपने वर्तमान रूप को प्राप्त करने में किन-किन स्थितियों का सामना करना पड़ा होगा। हमें इन प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए मानव सभ्यता के विकास के क्रम को समझना होगा।

प्रागैतिहासिक काल

इस युग में मनुष्य ने जिस सभ्यता का निर्माण किया, उसे हम आदि

कालिन सभ्यता या आदिम सभ्यता कहते है। यद्यपि इस काल के लिए कोई लिखित प्रमाण का अभाव है इसलिए इसके बारे में, कालक्रम, रहन सहन आदि के बारे में कुछ कहना कठिन है। फिर कुछ इतिहासकार एवं विद्वानों ने शास्त्रों के आधार और अनुमान के आधार पर प्रागैतिहासिक काल के मानव जीवन की एक रूपरेखा तैयार करने का प्रयत्न किया है। जिसे पूर्ण रूप से सत्य या असत्य भी नहीं कहा जा सकता है। अतः अब हम इन्हीं विद्वानों द्वारा दी गयी जानकारी के आधार पर मानव की आदिम सभ्यता के बारे में जानते है।

मानव एक विवेक हीन प्राणी के रूप में —

हम जानते है कि पृथ्वी पर दो तरह के प्राणी होते है (i) विवेकशील और (ii) विवेक हीन। इनमें से मनुष्य सबसे विवेकशील प्राणी माना जाता है। किन्तु, मानव सभ्यता के प्रथम चरण में मनुष्य में विवेक नाम की कोई चीज नहीं थी और उसका जीवन पशुवत था। मनुष्य और पशुओं के जीवन के तरीके में कोई खास अन्तर नहीं था। मनुष्यों ने अपने अन्दर छिपी विवेक की शक्ति से परिस्थितियों को बदल दिया। अपनी बुद्धि की शक्ति से क्रमिक विकास करता गया। इसी प्रकार मानव सभ्यता के सीढ़ियों पर निरन्तर चढ़ता गया। मानव सभ्यता के इस प्रारंभिक चरण को विद्वानों ने पूर्व पाषाण युग का नाम दिया है।

मानव भोजन संग्राहक के रूप में

मानव सभ्यता के द्वितीय चरण को मनुष्य के भोजन संग्राहक के रूप में लिया जा सकता है। मानव जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकताएँ होती हैं। (i) भोजन (ii) वस्त्र और (iii) आवास। इन तीनों में से भोजन मानव जीवन की परमावश्यक ही नहीं वरन् अनिवार्य आवश्यकता है। उन दिनों कृषि नाम की कोई चीज़ से ये मानव अनभिज्ञ थे। अतः अपने जीवन-यापन के लिए उन्हें पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर रहना पड़ता था। वे घूम-घूम कर भोजन की तलाश किया करते थे। जंगली कंद-मूल एवं जानवरों का मांस खाकर ही क्षुधा की तृप्ति करते थे। अपने आपको ठंढ़क, गर्मी और बरसात से बचाने के लिए वे वस्त्र के रूप में वृक्षों के पत्ते एवं छाल और आवास के लिए पहाड़ की कंदराओं एवं सघन झाड़ियों का प्रयोग करते थे। नदी-नाले एवं झरनों के जल से ही प्यास बुझाते थे। जानवरों का शिकार करने और अपने को हिंसक जानवरों से सुरक्षित करने के लिए वे प्रारम्भ में पत्थरों के औज़ार बनाये जो खुरदुरे एवं कमजोर होते थे। अतः कालान्तर में उन्होंने धातुओं के औजार का आविष्कार किया। इस तरह मानव सभ्यता का यह इतिहास क्रमशः पाषाण युग और धातु युग के नाम से जाना जाता है।

इसी अध्याय का शेष भाग अगले क्रम में ——